STEPPING STONE
SCHOOL (HIGH)

Sub:2nd language (Hindi)

Topic: Rapid reader Ch-1.

Class-V

Date:. 5/5/2020.

Time limit:40mins.

Worksheet no: 8.

दिए गए पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर रेखांकित वर्तनी को लिखिए।

1 अमीरी का दंड

जाड़े का मौसम था। एक दिन सम्राट अकबर और मंत्री बीरबल साथ-साथ शिकार खेलने निकले। कुछ दूर जाने पर उन्हें सड़क के किनारे एक गरीब आदमी लेटा हुआ दिखाई पड़ा। उसके शरीर पर एक फटी-पुरानी चादर के सिवा और कोई भी कपड़ा नहीं था।

अकबर ने उस आदमी की ओर इशारा करके बीरबल से कहा—"बीरबल! देखो, यह आदमी मरा पड़ा है।"

बीरबल ने उसको ध्यान से देखकर उत्तर दिया–"मरा नहीं है सरकार! यह आराम से गहरी नींद में सो रहा है।"

अकबर ने फिर कहा–"क्या कहते हो! भला इतनी सरदी में किसी को नींद आ सकती है! मुलायम बिस्तर की कौन कहे, इसके शरीर पर तो एक कपड़ा तक नहीं है, नीचे कंकड़-पत्थर, ऊपर से कड़ाके की सरदी! ऐसी दशा में किसी को नींद कहाँ से आएगी! और तुम तो कहते हो कि यह गहरी नींद में सो रहा है। गहरी नींद तो अमीरों को ही नसीब होती है। यह गरीब तो मौत की नींद सो रहा है।"

बीरबल बोले–"नहीं श्रीमान्, सच कह रहा हूँ, यह बड़ी मीठी नींद में सो रहा है। ऐसी नींद तो हमें और आपको भी दुर्लभ है।"

दोनों उस आदमी के पास जाकर खड़े हो गए। अकबर ने उसे ध्यान से देखा तो पता चला कि वह सचमुच सोया हुआ है और ऐसी गहरी नींद में सोया हुआ है कि घोड़ों की टाप की आवाज़ से भी उसकी नींद नहीं टूटी।

अकबर को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने बीरबल से कहा–"सचमुच यह तो बड़े आराम से सोया हुआ है, लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आता कि इसे इस सरदी में बिना रज़ाई-गद्दे के इस कंकड़-पत्थर पर गहरी नींद कैसे आ गई?"

बीरबल ने कहा–"जहाँपनाह! अमीरी से नींद का कोई खास संबंध नहीं है। अमीरी या आरामतलबी से नींद नहीं आती। नींद तो मेहनत करने से आती है। यह गरीब बेचारा मेहनत करते-करते थक गया होगा, तब इसे ऐसी मीठी और गहरी नींद आई होगी।"

अकबर ने बीरबल की बात को काटते हुए कहा–"अच्छी नींद तो आराम से लेटने पर ही आ सकती है। इस आदमी को बिना रज़ाई-गद्दे के कंकड़-पत्थर पर

जब इतनी गहरी नींद आती है तो अगर इसे अमीरों का खाना, बढ़िया मुलायम बिस्तर मिले तो यह और भी सुख से सोएगा।"

बीरबल बोले–"हुज़ूर! अगर आप कहें तो इसे कुछ दिनों के लिए अमीर बनाकर देख लें।"

अकबर ने बीरबल का प्रस्ताव मान लिया। उस आदमी को जगाकर वे उसे महल में ले गए। बादशाह ने उसके रहने के लिए एक सुंदर कोठी का प्रबंध कर दिया। उसके खाने-पीने, आराम करने के सभी साधन उपलब्ध करा दिए गए तथा सेवा के लिए बीसों नौकर भी रख दिए गए। मतलब यह कि एक गरीब को जबरदस्ती अमीर बना दिया गया। उसे दिन-रात आराम से पड़े रहने के सिवा और कोई काम नहीं था।

जब दस-बारह दिन हो गए तब एक दिन बाद अकबर ने बीरबल से उसका हालचाल पूछा।

बीरबल बोले "हुज़ूर, उस नकली अमीर को तो तीन दिन से बुखार है।"

अकबर ने चौंककर पूछा–"क्यों, क्या हुआ? लगता है, उसके आराम में कोई लापरवाही हुई है।"

बीरबल ने उत्तर दिया – "जहाँपनाह! तीन-चार दिन पहले वह शाम को गाड़ी में बैठ कर सैर करने के लिए निकला था, रास्ते में उसे ठंडी हवा लग गई, ज़ुकाम हो गया और उसके बाद बुखार चढ़ गया।"

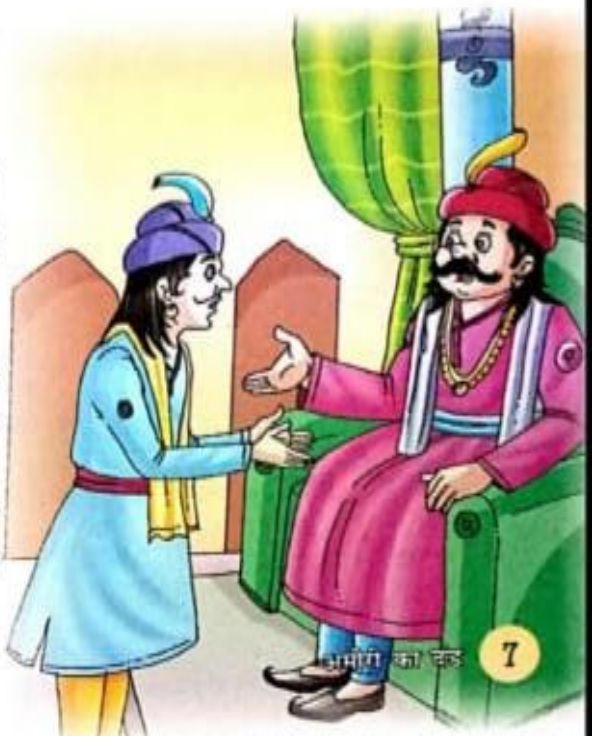

बच्चों दिए गए पाठ के अंश में यह बताया जा रहा है कि मनुष्य परिश्रम के बल पर ही सुखी और स्वस्थ जीवन जी सकता है। गरीब व्यक्ति अपनी जीविका चलाने के लिए दिन-रात परिश्रम करता है। इसलिए थक जाने पर उसे मुलायम बिस्तर की आवश्यकता नहीं होती। वह कंकड़-पत्थर पर ही मीठी और गहरी नींद में सो जाता है। बीरबल यही समझाने का प्रयत्न अकबर को करते हैं पर अकबर को सिर्फ यही लगता है कि अच्छी नींद मुलायम रजाई-गद्दों में ही आ सकती है। इसलिए उन्हें समझाने के लिए बीरबल ने उस आदमी को कुछ दिनों के लिए अमीर बनाने का प्रस्ताव अकबर के सामने रखा। अकबर ने दस-बारह दिनों बाद जब उस व्यक्ति का हाल जानना चाहा, तब उन्हें पता चला कि वह शाम को गाड़ी में बैठकर सैर करने निकला तो ठंडी हवा लगने से उसे जुकाम हो गया और बुखार चढ़ गया।

(बच्चों पाठ के रेखांकित किए गए सारे वर्तनी घृष्ठ (sheet) पर साफ और स्पष्ट लिखिए। बाद के अंश के वर्तनी भी इसी के साथ जारी रखिएगा।)